Original Paper

ISSN: 2321-1520

'अपना गाँव' कहानी में अभिव्यक्त वेदना और दलित चेतना

परमार सुनिलकुमार रमणभाई

पीएच.डी. शोध-छात्र,भाषा साहित्य भवन,
गुजरात यूनिवर्सिटी अहमदाबाद (गुजरात)

हिन्दी दलित साहित्य, दलितों की आपबीती का साहित्य हैं । हजारों वर्षो से दलित समाज ने जो भोगा है, सहा है उसकी अभिव्यक्ति, उसकी प्रतिक्रिया, व्यवस्था के प्रति विद्रोह एवं चेतना का स्वर ही दलित साहित्य की पहचान है । हिन्दी दलित कहानी की शुरुआत भी आठवें दशक में हुई थी । इनमें दलितों के प्रति सवर्णों द्वारा किये जा रहे अत्याचारों, शोषण, अन्याय, जाति-भेद, परंपरित व्यवसाय से मुक्ति का चित्रण देखने को मिलता है। प्रमुख हिन्दी दलित कहानीकारों में मोहनदास नैमिशराय का नाम प्रथम पंक्ति के साहित्यकार के रूप में लिया जाता है । उन्होंने तीन महत्त्वपूर्ण कहानीसंग्रह हिन्दी दलित साहित्य को दिये हैं । (१) आवाज़ें (१९९८) (२) हमारा जवाब (२००५), (३) दलित कहानियाँ (२०१५) । नैमिशराय द्वारा लिखित 'आवाजें' एक महत्त्वपूर्ण दलित कहानी संग्रह है । संग्रह की कहानियों में दलित अस्मिता के सरोकारों एवं दलित चेतना की बेचैनी का तीखा स्वर है ।

नैमिशराय द्वारा लिखित 'अपना गाँव' कहानी 'आवाज़ें' कहानी-संग्रह में संग्रहित है । यह कहानी सबसे पहले अक्तूबर १९९५ में 'युद्धरत आम आदमी' (सं.विमल थोरात) पत्रिका में छपी थी । कहानी का कथ्य कुछ इस प्रकार है-

लहना गाँव में आज दहशत मची हुई थी । गाँव में शोर उभरने लगा था क्योंकि जिस गाँव ने आज तक कबूतरी (छमिया) का मुँह न देखा था, उसी गाँव के ठाकुर के मंझले बेटे सुल्तानसिंह ने कबूतरी को पूरे गाँव में नंगा करकर घुमाया था । सबकी आंखों के सामने यह कांड होता है ।

गाँव में शोर सुनकर अस्सी साल का ददिया ससुर घर से बाहर निकलता है तो अपनी आँखों से कबूतरी को नंगा देखते हैं । ददिया ससुर जब यह कांड देखता है तो उसकी स्थिति बीमार बूढ़े घोड़े जैसी हो जाती है जिसके बदन पर तड़ातड चाबूक पड रहे हो और दौड़ न पा रहा हो । यह जुलूस जब पास में आता है तो हरिया अपनी लाठी जमीन पर टेकते हुए उन्हें रोकने की कोशिश करता हैं लेकिन ठाकुर का कारिन्दा उसे धकेल देता है । हरिया को जमीन पर गिरते देखकर कबूतरी पीड़ा से चीख उठती है लेकिन उनकी चीख शोर में दब जाती हैं । कबूतरी को सारे गाँव में घुमाया जाता है । कबूतरी रोती है फिर भी उसकी मदद के लिए कोई नहीं आता ।

शाम होते-होते कबूतरी नंगे बदन घर लौटती है । किसी को कबूतरी से निगाह मिलाने की हिम्मत न हुई । सबकी आँखें शर्म से झुकी हुई थी । हरिया का बेटा हरफूल सोच रहा था कि शहर से उसका बेटा संपत आयेगा तो उसे क्या जवाब देगा ? आधी रात हो जाती हैं लेकिन कबूतरी को नींद नहीं आ रही थी । उसे कपड़े पहनने के बाद

भी अपना शरीर नंगा महसूस होता है । उसे याद आता है कि उसका पति हफ्ते पहले शहर जाने के हेतु पाँच सौ रुपये उधार ले गया था । ठाकुर खेतों में काम करके कर्जा उतारने की बात कहता है। लेकिन कबूतरी ने अपने देवर से कहकर ठाकुर के खेत में काम करने से मना करवा दिया । लेकिन जब दूसरे दिन कबूतरी जंगल से लौट रही थी तो ठाकुर का बेटा उसे अकेली देखकर रास्ता रोक लेता है और अपने खेत में काम करने के लिए कहता है । कबूतरी उसके बात करने के ढंग से समझ गयी थी कि वह उससे क्या चाहता है। इसीलिए वह सुल्तानसिंह कुछ कहे उससे पहले ही गाँव की ओर चल पड़ती है ।

दूसरे दिन की दोपहर को वह जंगल से लकड़ियाँ लेने के लिए घर से निकलती है तो उसके मन में संशय होता हैं । लेकिन कुछ दूरी पर एक औरत को गाय-भैसें के साथ देखती है तो उसका मन हलका हो जाता है । वह औरत कबूतरी के पास आती हैं और बात-बात में ठाकुर की सच्चाई का पूरा भांडा खोल देती है। वह भी ठाकुर के हाथ से नहीं बच पायी थी । उसको भी ठाकुर ने आधी घरवाली बना डाला था । कबूतरी लकडियाँ लेकर घर की ओर बढ़ती हैं और लगभग आधा मील का रास्ता पार कर ही लिया था कि पीछे से ठाकुर का बेटा आवाज़ देता हैं । कबूतरी जाने के लिए पाँव बढ़ाती है तो वह उसका हाथ पकड लेता है । वह अपना हाथ छुडा लेती है तो ठाकुर फिर से जबरदस्ती करता है और कहता है कि - 'चल आज से ही म्हारे खेतों में काम कर, तुझे खसम का कर्ज नहीं चुकाना क्या?'१ कबूतरी जवाब देती है कि - 'मैंने किसी से कोई करज़-वरज नई लिया, जिसने लिया है वही देगा भी ।'२ यहाँ कबूतरी के पात्र में चेतना देखने को मिलती हैं । वह फिर जाने के लिए आगे बढती है तो वह फिर से उसका हाथ पकडकर कहता हैं कि - 'मैं फिर से कहता हूँ, तू म्हारे खेत पर चल वरना....।' कबूतरी कहती है "वरना क्या करेगा ?'३ छमिया हाथछुडाते हुए कहती है । कबूतरी की यह बात सुनकर ठाकुर का वेटा बाज की तरह कबूतरीपर झपट पड़ता है। वह और उसके चार कारिदें यों पाँच लोग मिलकर उसके कपड़े फाड़ देते हैं । कबूतरी बहुत चिल्लाती है लेकिन उन पर कोई असर नहीं होता । अंतः उसे नंगे बदन गाँव चलना पडता है और सारा गाँव नंगे बदन हालत में देखता है । शाम को कबूतरी अपने को छिपाती घर आती हैं । उस रात उसे नींद नहीं आती । सुबह कबूतरी की यह हालत देखकर सास रो पडती हैं साथ में कबूतरी भी रोने लगती है । रोने की आवाज़ सुनकर आसपडोस वाले भी आ जाते हैं । हरफूल और हरिया को लोग दिलासा दे रहे थे । अचानक कोई युवक बोल उठता है जिसमें दलित चेतना के दर्शन होते हैं "कब तक ऐसा चलेगा? कल संपत की घरवाली को नंगा किया, आज किसी और की भैन-बैटी को भी नंगा गाँव में घुमा सकै हैं ?' 'पर गरीब लोग कर भी क्यों सकै हैं ?' हरिया के पास बैठा एक बूढा उत्तर में कहता हैं ।' 'भौत कुछ कर सकै हैं अगर सब चाहें तो ।'४ यह सुनकर उस युवक को बल मिलता है वह ऊँची आवाज़ में कहता है कि हमें पुलिस में रिपोर्ट लिखानी चाहिए । सब मिलकर संयुक्त ऐलान करते हैं कि 'हम अनशन करेंगे । भूख-हड़ताल करेंगे । हमारी समाधियाँ यहीं बनेगी । अन्न का एक दान भी न खाएंगे । उनके मरने के बाद ही गाँव के लोग उनकी अर्थियों को कंधा दें । बहुत सह लिए ठाकुरों के पीढ़ी-दर-पीढ़ी जुल्म । अब और न सहेंगे ।'५ यहाँ दलितों का सवर्णों के प्रति अपना आक्रोश व्यक्त होता हुआ दिखाई देता है । संपत को गाँव में हुई इस कांड की खबर अखबार से पडती है और वह शहर से भागा-भागा घर आता है । घर में किसी ने कुछ नहीं खाया था । संपत गुस्से में बोलता हैं कि 'अरे तुम मर जाओगे तो कौन-सा ठाकुर को कुछ फर्क पड जाएगा । उसके घर के बरतनों में तो कमी नहीं आ जाएगी । हवेली की एक ईंट पर भी कुछ असर नहीं होगा । और सच बात तो यह है कि तुम सब तो पहले से ही मरे हुए हो । मुर्दे न होते तो मेरी बीबी को नंगे होते हुए देखते रहते ।'६ हरफूल संपत को समझाता है कि ठाकुर की पहुँचे चीफ मिनिस्टर तक है तो संपत आक्रोश में आकर कहता है कि 'भैया ठाकुर की पहुंच चीफ मिनिस्टर तक हो या प्राइम मिनिस्टर तक । हम पर जुल्म हुआ है और उसकी रिपोर्ट पुलिस में लिखानी जरूरी है।'७ हरिया भी संपती की बात में हामी भरता है । जिससे हरफूल दादा पोते पर बिगड़ते हैं तो संपत कहता है कि 'क्रांति करने वाले तो आज संसद और विधानसभाओं में जाकर सो गए हैं । हम तो केवल

हम पर जो जुल्म और अन्याय हुआ है उसके खिलाफ कुछ करना चाहते हैं । भैया हम, कब तक कमजोर बने रहेंगे ? कब तक गुलामों की तरह रहेंगे । तुम्हें मालूम नहीं बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर ने क्या कहा था । उन्होंने कहा था । गुलामों को गुलामी का अहसास करा दो वे गुलामी की जंजीरें स्वयं तोड़ देंगे ।'८

पुलिस में रिपोर्ट लिखाने के लिए सब मिलकर थाने जाते हैं । लेकिन पुलिस इंस्पेक्टर रिपोर्ट लिखना तो दूर ठाकुर का नाम सुनकर आये सभी लोगों की पिटाई करता है । पिटाई में ग्यारह लोगों को चोट पहुँचती है । सुबह से शाम हो जाती है लेकिन थाने से गाँव वापिस कोई नहीं आया तो हरिया को चिन्ता होने लगती है । इतने में ही कस्बे से चुडीवाला मनियार आता है और हरिया को पुलिसथाने में जो कांड हुआ उसका पूरा ब्यौरा देता है । दूसरे दिन नौ बजे सब थाने से गाँव आते है । शाम को गांव में हरिया के घर पंचायत बैठती है, जिसमें हरिया अपना निर्णय सुनानेवाला था । सबसे पहले हरफूल फैसला करने को पंचों को कहता है तभी किसना बीच में बोलता हैं ''हरफूल भ्यै तुम्हारी इकले की बऊ नई सारे गाँव की है । उसकी इज्जत सारे गाँव की, सारी बस्ती की हैं ।'९ सब लोग अपनी-अपनी राय देते हैं । कोई कहता है कि ठाकुर के खेत की फसल जला दो तो कोई कहता है कि ठाकुर के जानवर कस्बे में बेच दो । तब हरिया अपना फैसला सुनाता है कि हम अपना नया गाँव बसाएंगे । जिस गांव में म्हारी कोई इज्जत नई, उस गाँव में रैने से कोई फायदा नई ।'१० तभी बिरमो भी हरिया की बात से सहमत होता है।

दूसरा दिन बस्ती में नयी शक्ति लेकर आता है । दो दिन इन कशमकश में बीत जाते हैं कि क्या-क्या बेचना है और क्या-क्या रखना है । चोथे दिन विधायक कुरील आता है जो दलित जाति का था और ठाकुर की मदद से प्रदेश में मंत्री बन गया था । वह हरिया से कहता है कि मुझे मुख्यमंत्री ने भेजा है तुम लोगों की मदद करने के लिए । हरिया आक्रोश भरे स्वर में उसे कहता है कि 'तुझे लाट गवन्नर ने भी भेजा है । ढेर सारे रुपये लाया होगा । उससे म्हारी बऊ का नंगा जिसम ढक नहीं जाएगा क्या । नई चइयै हमें सरकार और पुलिस की मदद । हम अपनी मदद खुद कर लेंगे ।'११ हरिया के इस वाक्य में सरकार की भ्रष्ट नीति पर अपना आक्रोश हैं । काली नदी के किनारे सब अपना पडाव ठहराते हैं । यही ईंट-भट्टे का मालिक रहमत अली सब को काम पर रख लेता है। कबूतरी पहली बार आज़ादी का अनुभव करती है । सबके चेहरे पर संतोष का भाव दिखाई देता हैं ।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि मोहनदास नैमिशराय रचित 'अपना गाँव' कहानी अपने आप में विशिष्ठ और दलित चेतना व वेदना से संपन्न कहानी है। दलितों की व्यथा, वेदना, पीड़ा को उजागर कर लेखकने उनकी अछूती संवेदनाओं को व्यापकता प्रदान की हैं । इस प्रकार दलित चेतना की सशक्त अभिव्यक्त कहानी में देखने मिलती है ।

संदर्भग्रंथ सूची

१. अपना गाँव (आवाज़े कहानी संग्रह), मोहनदास नैमिशराय, पृ.३७
२. वही, पृ.३७
३. वही, पृ.३८
४. वही, पृ.४०
५. वही, पृ.४३
६. वही, पृ.४४
७. वही, पृ.४५
८. वही, पृ.४६
९. वही, पृ.६०
१०. वही, पृ.६२-६३
११. वही, पृ.६५